PAGE NO.:
DATE: / /

ॐ नमः शिवाय

अध्यात्म की अभिव्यक्ति की चरम-
पराकाष्ठा है "काशी मरणान्मुक्ति"।
'मणिकर्णिका' को साधक से जोड़कर
स्वर्ण-सीढ़ी बना देने की गरिमा
श्री मनोज ठक्कर के अतिरिक्त
आज तक तो मैंने नहीं देखी।
मंहा का चरित्र और "मैं तेरा
गुरु नहीं" इन दोनों ने हृदय नहीं,
मस्तिष्क के समग्र तारों को
झनझना दिया। "निर्गुण धारा" की
"ज्ञानमार्गी शाखा" के प्रतिनिधि-
कवि कबीर को समझना साधारण
बात नहीं "जो घर जाले आपणा

PAGE NO.:
DATE: / /

चलो सो अपने साथ'

सच है परब्रह्म का साक्षात्कार करना है तो चलो 'महा' के साथ। 'महाकाल' का प्रलयंकारी, सुखकारी रूप देखना है तो "मनोज" के 'महा' की अंगुली पकड़ो। "महिम्न स्तोत्र" को समझना है तो "मैं तेरा गुरु नहीं" को जानो।

इस पुस्तक को पढ़कर तुलसी के रामचरित के शिव को पहचाना, काशी को जाना और सच कहूँ, इच्छा प्रबल हुई कि इस नश्वर देह को मणिकर्णिका घाट पर छोड़कर ही अपने "राम" तक पहुँच

PAGE NO.
DATE: / /

पाऊँगी।

साथ ही इस पुस्तक को पढ़कर श्मशान के लिये, आम आदमी के मन में जो भय, घृणा और अंधविश्वास होते हैं वे भी दूर होंगे साथ ही "श्मशान विरक्ति" यह उक्ति भी असत्य सिद्ध हो सकती है।

सच है यह पुस्तक अपने आप में अद्वितीय, असाधारण, सागर सी गहराई, तो अंतरिक्ष सी सीमाहीन है। इसे पढ़कर मैं सचमुच अभिभूत हो उठी।

स्नेहलता व्यास